इतिहास - प्रथम वर्ष

Unit-1 (प्राचीन भारतीय इतिहास का परिचय, संस्कृति एवं परम्परा)

* इतिहास कालक्रमानुसार घटनाओं का लेखा-जोखा है इतिहास के साथ दर्शन जुड़ने से इतिहास विज्ञानसम्मत हो जाता है। अतीत मे घटित घटनाओं की सत्यता को हम वैज्ञानिक तरीको से जाँच करते है। तथा घटनाओं के प्रस्तुतीकरण मे कला का सहारा लेते है। इतिहास को इसी लिए कला एवं विज्ञान का सुन्दर समन्वय माना जाता है।

* परम्परा - जब एक पीढ़ी की संस्कृति एवं सांस्कृतिक मूल्य आने वाली पीढ़ी मे हस्तांतरित होते है तब यह परम्परा बन जाती है। इस परम्परा मे उन सभी विचारो, आदतों, प्रथाओं एवं मूल्यो का योग है जो व्यक्तियो के समुदायो का होता है। एवं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी मे हस्तांतरित होता रहता है। परम्परा का अर्थ चिंतन तथा विश्वास करने की विधि का हस्तांतरण है।

भारतीय संस्कृति

किसी - जाति, समाज एवं देश की संस्कृति उन जीवन मूल्यो पर आधारित होती है। जिसे उस जाति समाज एवं देश के लोग न केवल मानते है अपितु अपने जीवन मे उनका आचरण करते है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार वेद है। वेदो को अपौरुषेय कहा गया है। वेदो मे वर्णित ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है जो तपस्या द्वारा हमारे प्राचीन ऋषि - मुनियो ने प्राप्त किया। मौखिक परम्परा मे यह ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सतत् हस्तांतरित होता रहा। कालान्तर मे यह ज्ञान वेदो मे संकलित हुआ। वेद ज्ञान के भंडार है इसी लिए आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारा दिया था कि 'वेदो की ओर लौट चलो।'

वेदो के संकलनकर्ता कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास को कहा जाता है। वेद चार है -

(1) ऋग्वेद (2) सामवेद (3) यजुर्वेद (4) अथर्ववेद

महाकाव्य - वैदिक साहित्य के अन्तर्गत रामायण एवं महाभारत दो महाकाव्यो का जिक्र आता है -

(1) रामायण (2) महाभारत

BULANDSHAHR

(i) रामायण - रामायण मे सात अध्याय है जो काण्ड के नाम से जाने जाते है (1) बालकाण्ड (2) अयोध्याकाण्ड (3) अरण्यकाण्ड (4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) लंकाकाण्ड (7) उत्तरकाण्ड भारत के प्रत्येक भाग मे लोककथाओ मे भी रामकथा प्राप्त होती है। जो इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है भारत के अलावा तिब्बत, म्यांमार, लाओस, कम्बोडिया, एवं इण्डोनेशिया से भी रामायण को लोकप्रियता मिली है। कथा के नायक राम एक आदर्श पुरुष थे उनकी सत्यनिष्ठा, कर्तव्य-परायणता, मातृ-पितृभक्ति, भ्रातृप्रेम जैसी कई चारित्रिक विशेषताओ ने उन्हे अवतारी पुरुष बना दिया।

(ii) महाभारत - भारतीय परम्परा मे अठारह की संख्या का विशेष महत्व है। अठारह की संख्या विजय का प्रतीक मानी गई है। महाभारत का प्रारम्भिक नाम जय संहिता ही था। महाभारत के 1 लाख श्लोक 18 पर्वो (अध्यायो) मे विभाजित है। महाभारत का युद्ध 18 दिन चला था। भगवद्गीता 18 अध्यायो मे विभाजित है। महाभारत के रचयिता वेदव्यास जी ने 18 पुराणो की रचना की।

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

Unit-II (सिन्धु सभ्यता एवं वैदिक काल)

सिन्धु सभ्यता - सिन्धु सभ्यता का पूर्वाभास सर्वप्रथम 1826 ई० में चार्ल्स-मैसन नामक एक अंग्रेज को हुआ था। उसे हड़प्पा नामक स्थान से बड़ी संख्या में ईंटें प्राप्त हुई थीं। 1920 ई० में पुरातत्व विभाग ने अनेक स्थानों पर खुदाई कार्य शुरू करवाकर सिन्धु सभ्यता के असंख्य अवशेष प्राप्त किये। वास्तव में सिन्धु सभ्यता की खोज में पुरातात्विक स्रोतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। 1921 ई० दयाराम साहनी और 1922 में राखालदास बनर्जी द्वारा क्रमशः उत्खनन के बाद 1924 में तत्कालीन भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने यह घोषणा की कि सिन्धु घाटी में एक नवीन सभ्यता की खोज हुई है।

सिन्धु सभ्यता का विस्तार -

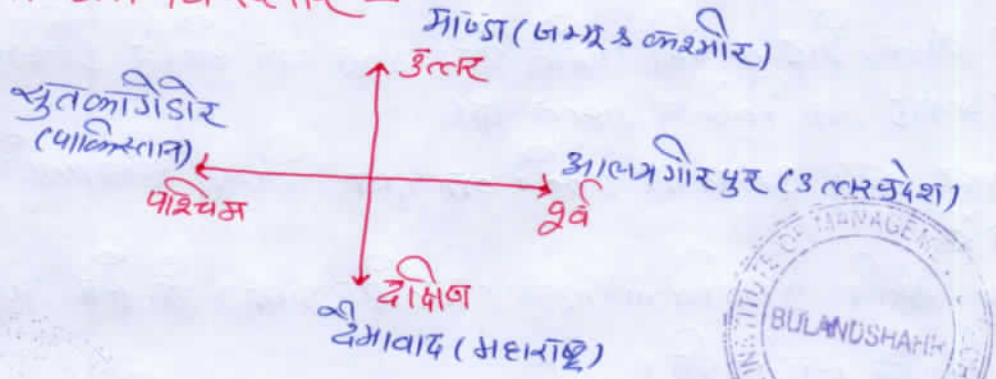

BULANDSHAHR

- सिन्धु सभ्यता के नगर -

(1) **हड़प्पा** - यह वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। यहाँ से शंख का बैल, स्त्री की मूर्ति जिसके गर्भ से पौधा निकलता हुआ, R-37 कब्रिस्तान, गेहूँ की भूसी, मटर व तिल की खेती के प्रमाण।

(2) **मोहनजोदड़ो** - सिन्धी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है - मृतकों का टीला। मोहनजोदड़ो के आस-पास की भूमि बड़ी उपजाऊ थी। जिसे सिन्ध का बाग कहा जाता था। यहाँ से 1398 मुद्रें, काँस्य की नर्तकी, सूती कपड़े के अवशेष, स्नान का पैमाना, दाढ़ी वाले मनुष्य की प्रतिमा, पशुपति की मुद्रा आदि।

(3) **चन्हूदड़ो** - मनके बनाने का कारखाना, पीतल की बैलगाड़ी, लिपिस्टिक, तराजू आदि।

(4) **लोथल** - यह सिन्धु सभ्यता का एक मात्र बन्दरगाह था, यहाँ से फारस की मुद्रें, तीन युगल शवाधान, हाथी दाँत पैमाना आदि।

(5) कालीबंगा - अग्निकुण्ड, बेलनाकार मुद्रे, बैल की मूर्ति, लकड़ी की नाली, हल से जुता हुआ खेत के साक्ष्य आदि प्राप्त हुये हैं।

(6) धौलाविरा - सिन्धु सभ्यता का एक मात्र नगर जो 3 भागों - दुर्ग, मध्यमा एवं निचला नगर में विभाजित था।

सिन्धु घाटी की प्रमुख विशेषताएं -

(1) मुद्रों पर अंकित चित्रों से यह ज्ञात होता है - कि हड़प्पा समाज सम्भवतः मातृसत्तात्मक था।

(2) समाज अनेक वर्गों में विभाजित था - पुरोहित, व्यापारी, अधिकारी, शिल्पी, कुलीहे, श्रमिक आदि।

(3) लोग बैल, भेड़ बकरी पालते थे। गाय का कोई उल्लेख नहीं, कूबड़ वाले सांड का विशेष महत्व था।

(4) कपास का उत्पादन करने का श्रेय सिन्धु सभ्यता के लोगों का जाता है।

(5) सिन्धु लिपि भावचित्रात्मक (पिक्टोग्राफ) थी जो दायीं ओर से बांयी ओर लिखी जाती थी।

(6) मुद्रा बनाने में सर्वाधिक उपयोग - सेलखण्डी का प्रयोग किया था।

(7) सिन्धु सभ्यता के लोगों का प्रमुख खेल - शतरंज था।

वैदिक काल

जिस काल में वेदों की रचना हुई है उस काल को वैदिक काल कहते हैं। वैदिक काल को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) पूर्व वैदिक काल - समय काल 1500 BC से 1000 BC तक माना जाता है। इस काल में ऋग्वेद की रचना हुई इसलिए इस काल को ऋग्वैदिक काल भी कहा जाता है। पूर्व वैदिक काल के लोग लोहे के प्रयोग से अपरिचित थे। परन्तु सोने के प्रयोग से परिचित थे सोने को निष्क कहा जाता था।

(2) उत्तर वैदिक काल - समय काल 1000 BC से 600 BC तक माना जाता है। इस समय काल में तीन वेदों (सामवेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद) की रचना हुई है। उत्तर वैदिक काल के लोग लोहे के प्रयोग से परिचित थे वे लोहे को कृष्ण अयस कहते थे।

1. ऋग्वेद - का अधिकांश भाग देव स्तुतियों से भरा हुआ है। ऋग्वेद में 10 मण्डल एवं 1028 सूक्त हैं। ऋग्वेद के मण्डल 2 व 7 सबसे पुराने मण्डल हैं। मण्डल 3 विश्वामित्र से सम्बन्धित है। गायत्री मन्त्र की रचना विश्वामित्र ने की जो तीसरे मण्डल में वर्णित है। सातवां मण्डल दशराज युद्ध से सम्बन्धित है। दसवाँ मण्डल पुरुषसूक्त से सम्बन्धित है। पुरुषसूक्त में ही सर्वप्रथम वर्ण व्यवस्था का उल्लेख है।

2. यजुर्वेद - में यज्ञों के नियमों एवं विधि-विधानों का संकलन मिलता है। यह कर्मकाण्ड प्रधान है। यजुर्वेद की दो शाखायें हैं-
(i) शुक्ल यजुर्वेद - इसे वाजसनेयी संहिता भी कहते हैं। इसकी दो माध्यन्दिन एवं काण्व हैं यह उत्तर भारत में प्रचलित है।
(ii) कृष्ण यजुर्वेद - इसकी शाखायें - काठ, मैत्रायणी एवं तैत्तिरीय हैं। यह दक्षिण भारत में प्रचलित है।

3. सामवेद - इसमें मुख्यतः यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। इसे भारतीय संगीत का मूल कहा जाता है।

4. अथर्ववेद - इसमें मनुष्यों के विचारों एवं अंधविश्वासों का उल्लेख मिलता है। इसमें - आयुर्वेद, चिकित्सा, मृत प्रेत, जादू-टोना एवं विवाह आदि का विवरण मिलता है।

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

वैदिक काल की प्रमुख विशेषतायें :-

1. आर्थिक जीवन कृषि एवं पशुपालन पर आधारित था।
2. कृषि योग्य भूमि को 'उर्वरा' कहा जाता था। तथा सम्पत्ति की गणना गाय से की जाती थी।
3. उत्तर वैदिक काल में मूर्तिपूजा प्रारम्भ हो गई थी।
4. राजा की पटरानी 'महिषी' कहलाती थी।
5. पुनर्जन्म का सिद्धान्त सर्वप्रथम 'शतपथ ब्राह्मण' में मिलता है।
6. अश्वमेध यज्ञ राजकीय यज्ञों में सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण था।

Unit-III (मगध साम्राज्य का उत्कर्ष एवं मौर्य साम्राज्य)

मगध साम्राज्य का उत्कर्ष :- महाकाव्य व पुराणों के माध्यम से जानकारी प्राप्त होती है कि मगध का प्राचीनतम ज्ञात राजवंश 'बृहद्रथ' था। वसु पुत्र बृहद्रथ ने गिरिव्रज को राजधानी बनाया। हालांकि डा० राय चौधरी के अनुसार मगध के इतिहास का प्रारम्भ हर्यंक वंश के बिम्बिसार के समय से होता है। इससे पूर्व का इतिहास अन्धकारपूर्ण है।

हर्यंक वंश (544 BC to 412 BC) — हर्यंक वंश की स्थापना बि० बिम्बिसार ने की। यह बुद्ध का समकालीन था। इसकी प्रारम्भिक राजधानी गिरिव्रज थी परन्तु बाद में राजगृह को अपनी राजधानी बनाया। बिम्बिसार के बाद उसका पुत्र अजातशत्रु राजा बना तथा अजातशत्रु के बाद उसका पुत्र उदायिन राजा बना। हर्यंक वंश का अन्तिम शासक नागदशक था। हर्यंक वंश को पितृहंता वंश भी कहा जाता है। अजातशत्रु के शासन काल में ही प्रथम बौद्ध संगीति (483 BC) राजगृह में हुई थी।

शिशुनाग वंश (412 BC - 344 BC) — हर्यंक वंश के अन्तिम राजा नागदशक को शिशुनाग नामक एक अमात्य ने हत्या करके शिशुनाग वंश की स्थापना की। इस वंश का सबसे प्रतापी राजा कालाशोक था। इसके शासन काल में ही द्वितीय बौद्ध संगीति (383 BC) का आयोजन हुआ।

नंद वंश - (344 BC - 328 BC) - इस वंश का सबसे शक्तिशाली राजा महापद्मानंद था इसी ने इस वंश की स्थापना की थी। इस वंश में कुल 9 राजा हुए इसलिए इस वंश को नवनंद भी कहते हैं। इस वंश का अन्तिम राजा धनानंद था यह सिकन्दर का समकालीन था।

मौर्य वंश (322 BC - 187 BC)

चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से नंद वंश का विनाश करके मौर्य वंश की स्थापना की। तथा 322 BC में वह मगध का शासक बना। चन्द्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस निकेटर को युद्ध में पराजित किया अन्त में सेल्यूकस को सन्धि करनी पड़ी इस सन्धि के अनुसार सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त को अराकोशिया (कान्धार), काबुल, हेरात एवं जेड्रोशिया प्रान्त दिये।

सेल्यूकस ने मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा। जिसने 'इण्डिका' नामक पुस्तक लिखी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन मुनि भद्रबाहु से जैनधर्म की दीक्षा ली और श्रवणबेलगोला में 298 BC में सल्लेखन द्वारा अपना शरीर त्यागा। चन्द्रगुप्त मौर्य के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार (298 BC to 273 BC) मगध का राजा बना जिसे अमित्रघात के नाम से भी जाना जाता था।

अशोक (269 BC to 232 BC) — बिन्दुसार की मृत्यु के चार वर्ष पश्चात अशोक का राज्याभिषेक हुआ। राजगद्दी पर बैठने के समय अशोक अवन्ती (उज्जैन) का राज्यपाल था। राज्याभिषेक के 8वें वर्ष में 261 BC में अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया। कौटिल्य के अनुसार दोषियों को दण्ड देने के लिए यह युद्ध हुआ था। अशोक ने आजीवकों को रहने के लिए बराबर पहाड़ियों में चार गुफाओं (कर्ज, चोपार, सुदामा व विश्व झोपड़ी) का निर्माण कराया। उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु से अशोक ने बौद्धधर्म की दीक्षा ली। अशोक के शिलालेख की खोज 1750 AD में पादरी टैन्थैलर ने की। तथा सबसे पहले इन्हें - 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा।

अशोक का सबसे छोटा स्तम्भलेख रुम्मिदेई तथा सबसे बड़ा अभिलेख भाब्रू अभिलेख है।

BULANDSHAHR

मौर्य वंश का अन्तिम शासक बृहद्रथ था। जिसकी हत्या पुष्यमित्र शुंग ने की तथा शुंग वंश की स्थापना की।

कौटिल्य (चाणक्य) - चाणक्य का व्यक्तिगत नाम विष्णुगुप्त था। वे कुटल गोत्री होने के कारण 'कौटिल्य' भी कहलाते थे। पिता का नाम चणक तथा माता का नाम चशोमती था। पुराणों में इन्हें द्विजर्षभ (श्रेष्ठ ब्राह्मण) कहा गया है। चाणक्य ने 'अर्थशास्त्र' की रचना की। इनकी तुलना इटली के प्रख्यात राजनीतिक विचारक निकोला मैकियावली से तथा इनके ग्रन्थ अर्थशास्त्र की तुलना मैकियावली के 'द प्रिंस' से की जाती है। प्रारम्भ में वे तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य थे। बाद में उन्होंने 8 वर्ष तक शिक्षा दी थी। तक्षशिला में ही आचार्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को शिक्षा दी। नंद वंशीय शासक धनानन्द ने एक बार चाणक्य को अपमानित किया था। तब क्रुद्ध होकर नन्दों का समूलनाश करने का पण किया था। उसी पण को पूरा करने के लिए चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अस्त्र-शस्त्र इत्यादि की शिक्षा दी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से 322 BC में मगध पर अधिकार किया। चाणक्य के ग्रन्थ का नाम अर्थशास्त्र है यह राजनीति का सर्वप्रथम एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमन्त्री था।

Unit- III (गुप्त साम्राज्य)

गुप्त वंशावली का परिचय देने के लिए अनेक अभिलेख हैं। जैसे- समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख, कुमारगुप्त का बिलसड स्तंभ लेख स्कन्दगुप्त का भीतरी स्तम्भ लेख आदि इन अभिलेखो के आधार पर गुप्तो के स्थापक श्रीगुप्त को माना जाता है तथा उसका उत्तराधिकारी व पुत्र घटोत्कच था।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-334 AD) - घटोत्कच के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम शासक बना। चन्द्रगुप्त-I को गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। यह गुप्त वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। तथा पाटलिपुत्र को राजधानी बनाया। तथा 319 AD मे गुप्त संवत की स्थापना की जिसका उल्लेख मथुरा अभिलेख मे मिलता है। चन्द्रगुप्त-I ने ही गुप्तवंश मे सर्वप्रथम रजत (चांदी) मुद्राओ का प्रचलन करवाया था।

समुद्रगुप्त (350-375 AD) - गुप्तवंश का एक महान योद्धा व सेनापति था। इसे भारत का नेपोलियन भी कहा जाता है। समुद्रगुप्त ने अपने शासनकाल मे 12 शासको को हराया था। समुद्रगुप्त ने अपनी विजय के उपरान्त अश्वमेध यज्ञ किया। तथा महान बौद्ध भिक्षु वसुबन्धु को संरक्षण दिया था।

चन्द्रगुप्त-द्वितीय (380-412 AD) - समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद रामगुप्त कमजोर शासक हुआ। इसके शासन काल मे शको का आक्रमण हुआ। चन्द्रगुप्त-II ने रामगुप्त की हत्या करके शासक बना। इसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की तथा उज्जैन को दूसरी राजधानी बनाया। चन्द्रगुप्त-II के समय चीनी यात्री फाह्यान भारत आया। विक्रमादित्य के उज्जैन दरबार मे नवरत्न थे-

1. क्षपणक (ज्योतिष) 2. धन्वन्तरी (चिकित्सा) 3. कालिदास (नाटक)
4. अमर सिंह (शब्दकोष) 5. वाराहमिहिर (खगोल विज्ञान)
6. वररुचि (व्याकरण) 7. वेतालभट्ट (जादू) 8. घटखर्पर (कवि)
9. शंकु (शिल्प शास्त्र)

कुमारगुप्त प्रथम (415-455 AD) - महेन्द्रादित्य की उपाधि धारण की। मुद्राओ पर गरुड के स्थान पर मयूर की आकृति अंकित करवाई। कुमारगुप्त-I के शासनकाल मे नालन्दा विश्वविद्यालय

(आक्सफोर्ड आफ महायान) की स्थापना हुई। कुमार गुप्त के समय के सर्वाधिक गुप्तकालीन अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

स्कन्दगुप्त (455-467 AD) - गुप्त वंश का अन्तिम प्रतापी राजा था। शक्रादित्य की उपाधि धारण की। हूणो का गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण स्कन्द गुप्त के शासन काल की सबसे प्रमुख घटना है।

प्रमुख बिन्दु - 1. गुप्त युग वास्तव मे स्वर्ण युग था। इसे हिन्दू-पुनर्जागरण का युग भी कहा जाता है।

2. सारनाथ गुप्तकाल मे मूर्तिकला का सबसे बड़ा केन्द्र था।
3. वर्तमान मे प्रचलित हिन्दू धर्म का स्वरूप का निर्माण इसी युग मे हुआ।
4. भागवद्गीता की रचना इसी युग मे हुई।
5. अजंता की गुफाओ के चित्र इस युग की चित्रकला के सर्वोत्तम उदाहरण है।
6. दशमलव व शून्य की खोज इसी युग मे हुई।
7. सांची का मन्दिर (विदिशा), नचनाकुठार का मन्दिर (पन्ना), देवगढ़ का दशावतार मन्दिर (ललितपुर), भीतरगाव का मन्दिर (कानपुर), तिगवा का विष्णु मन्दिर (जबलपुर) आदि मन्दिर गुप्तकालीन वास्तुकला स्थापत्य के प्रमुख उदाहरण है।

BULANDSHAHR

वर्धन वंश - इस वंश को पुष्यभूति वंश भी कहा जाता है। इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति था। उसने पूर्वी पंजाब (हरियाणा) मे अपनी सत्ता स्थापित की तथा थानेश्वर को अपनी राजधानी बनाया। वर्धन वंश की शक्ति व प्रतिष्ठा का संस्थापक प्रभाकरवर्धन को माना जाता है उसने परमभट्टारक महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। वह पुष्यभूति का पुत्र था।

हर्षवर्धन (606-647 AD) - हर्षवर्धन प्रभाकरवर्धन का छोटा पुत्र था। माता यशोमती थी। प्रारम्भ मे हर्ष ने शोक वश सिंहासन ग्रहण करने मे अनिच्छा प्रकट की परन्तु सेनापति सिंहनाद के समझाने पर उसने सिंहासन ग्रहण किया। तथा कन्नौज को राजधानी बनाया। हर्ष ने राजा बनने के बाद घोषणा की कि जब तक वह समस्त भारत के राजाओ को न हरा देता है तब तक वह शान्त नही रहेगा। वह समुद्रगुप्त के समान महान विजेता था। बाणभट्ट हर्ष का दरबारी था जिसने हर्षचरित नामक पुस्तक लिखि। हर्ष-कालीन दो मुहरे नालंदा व सोनीपत से प्राप्त हुई है। सोनीपत से प्राप्त मुद्राओ पर शिव का वाहन नंदी अंकित है। नालन्दा से प्राप्त मुद्राओ पर 'परमभट्टारकमहाराजाधिराज श्री हर्ष' अंकित है। तथा पृष्ठ भाग पर 'उमा महेश्वर' की आकृति है।

प्राचीन भारत का अन्तिम हिन्दू सम्राट हर्षवर्धन था।

G.R. INSTITUTE OF ... BULANDSHAHR ... TECHNOLOGY

राजपूत राज्यो का उदय

1. **अग्निकुण्ड सिद्धान्त** - चन्दरबरदाई की 'पृथ्वीराज रासो' मे राजपूतो की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से बताई है। इसके अनुसार वशिष्ठ ने पृथ्वी के त्रास का हरण करने के लिए आबू पर्वत पर यज्ञ किया एवं इसी यज्ञ के अग्निकुण्ड से चार राजपूत कुलो का उदय हुआ -

(i) परमार (ii) प्रतिहार (iii) चौहान (iv) चौलुक्य (सोलंकी)

प्रतिहार वंश- इस वंश की स्थापना 'हरिचन्द्र' नामक राजा ने की थी इस वंश का सबसे प्रतापी राजा मिहिर भोज प्रथम था। जिसने प्रतिहारो की प्रतिष्ठा को पुनर्प्राप्ति की। मिहिरभोज वैष्णव मतानुयायी था। उसने 'आदिवराह' एवं 'प्रभास' की उपाधि धारण की। मिहिरभोज के बाद उसका योग्य पुत्र महेन्द्रपाल प्रथम शासक बना उसने परमभट्टारक, परमेश्वर, व महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। प्रसिद्ध विद्वान राजशेखर उसका दरबारी कवि एवं उसका गुरु भी था। उसने कर्पूरमंजरी, काव्य मीमांसा, भुवनकोश, बालरामायण आदि प्रसिद्ध कृतियो का सृजन किया। ह्वेनसांग ने प्रतिहार राज्य को पश्चिमी भारत का दूसरा सबसे बडा राज्य कहा। कुछ विद्वान हर्ष के स्थान पर प्रतिहार वंश के राजा महेन्द्रपाल-I को भारत का अन्तिम हिन्दू सम्राट मानते है।

परमार वंश- दसवी सदी के प्रारम्भ मे मालवा मे परमार शक्ति का उदय हुआ। इस वंश की स्थापना 'उपेन्द्र' अथवा कृष्णराज नामक व्यक्ति ने की थी। 'धारा' नामक नगरी परमार वंश की राजधानी थी। इस वंश का सबसे प्रतापी एवं शक्तिशाली शासक भोज था। इसके समय मे राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दोनो ही दृष्टि से अभूतपूर्व उन्नति हुई। भोज के बाद परमार शक्ति क्षीण हो गई।

BULANDSHAHR

चौहान वंश- इस वंश का शासन शाकम्भरी (अजमेर के आस पास) मे था। इस वंश का संस्थापक वासुदेव था। इस वंश का सबसे प्रतापी एवं प्रसिद्ध राजा पृथ्वीराज तृतीय (1179-1193) था। कथाओ मे उसे 'रायपिथौरा' कहा गया है। उनके राजकवि चन्दरबरदाई ने 'पृथ्वीराजरासो' की रचना की। पृथ्वीराजरासो को हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। पृथ्वीराज-III के समय मुहम्मद गौरी ने आक्रमण किया। 1191 ई० मे तराइन के प्रथम युद्ध मे पृथ्वीराज-III ने मुहम्मद गौरी की सेना को पराजित किया। किन्तु 1192 मे तराइन के द्वितीय युद्ध मे गौरी की विजय हुई। तराइन का द्वितीय युद्ध भारतीय इतिहास मे निर्णायक युद्ध माना जाता है। इसने भारतीय भूमि मे मुस्लिम सत्ता स्थापित होने का मार्ग प्रशस्त कर दिया!

चौलुक्य (सोलंकी) वंश -

चौलुक्य वंश को गुजरात का सोलंकी वंश भी कहते हैं। चौलुक्य वंश का संस्थापक मूलराज प्रथम था। प्रतिहार एवं राष्ट्रकूटों की पतनशील अवस्था का लाभ उठाते हुए आन्हिलवाड में चौलुक्य वंश की स्थापना की। मूलराज शैवधर्म का अनुयायी था। सौराष्ट्र स्थित 'सोमनाथ मंदिर' को उसने प्रमुख तीर्थ के रूप में विकासित किया। भीमदेव प्रथम (1025-1064 AD) के समय महमूद गजनवी ने 1025 में सोमनाथ पर आक्रमण किया। मंदिर लुटेरा महमूद अपार धन सम्पत्ति गजनी ले गया। भीमदेव प्रथम ने सोमनाथ मंदिर जो पहले ईंट एवं लकड़ी का बना था, उनके स्थान पर पत्थर का उपयोग कर उसका पुनः निर्माण कराया। भीम एक महान निर्माता था उसने पाटन में भीमेश्वरदेव एवं अट्टारिका मंदिरों का निर्माण कराया।

भीम द्वितीय गुजरात के चौलुक्य वंश का अन्तिम शासक था। उसने 'नारायणावतार' एवं 'अभिनव सिद्धराज' उपाधियाँ धारण की। भीम द्वितीय के काल में मोहम्मद गौरी ने गुजरात पर आक्रमण किया उसे मुंह की खानी पड़ी। इस प्रकार चौलुक्य शासकों ने इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया!

BULANDSHAHR

Unit-VI

(भारत में सामन्तवाद का उदय)

सामन्तवाद को अंग्रेजी में फ्यूडल सिस्टम अथवा फ्यूडलिज्म कहते हैं। 'फ्यूडल' शब्द फ्यूड से बना है जिसका अर्थ होता है जागीर अर्थात भूमि का ऐसा कुछ भाग जो सेवा करने की कुछ शर्तों पर उसका स्वामी किसी सामन्त को देता था। आरम्भ में जागीर वह भू-सम्पत्ति थी जिसके बदले जागीरदार (सामन्त) को सैनिक सेवा करनी पड़ती थी। कभी-2 पूरे के पूरे प्रदेश सामन्तों को सौंप दिये जाते थे जिनमें कई गांव होते थे। ये बड़े सामन्त कहलाते थे।

मध्ययुगीन यूरोपीय इतिहास में सामन्तवाद का उदय एवं विकास एक महत्वपूर्ण घटना थी। यूरोप में सामन्तवाद का उदय लगभग 5वीं शताब्दी में हो गया था। यूरोप में प्रसिद्ध सामन्तवादी व्यवस्था का विकास शार्लमैन (चार्ल्स महान (768-814 ई०) के साम्राज्य में हुआ।

* **भारत में सामन्तवाद :-** शक-कुषाण युग में प्रथम बार हमें सामन्तवाद के न केवल राजनीतिक अपितु सामाजिक तथा आर्थिक कारक भी देखने को मिलते हैं। इस प्रकार भारत में सामन्तवाद के अंकुर शक एवं कुषाण काल में दिखाई देते हैं मगर इसका पूर्ण विकास पूर्व मध्यकाल में हुआ। गुप्तकाल में भूमिदान के व्यापक प्रचलन ने ब्राह्मणों, सामन्तों के उद्भव का मार्ग प्रशस्त किया। सामन्तों के लिए कई संज्ञाओं का प्रयोग होता था। ये इस प्रकार हैं- भूपाल, भोक्ता, भोगी, महाभोगी, राजा, राज, राजपूत, ठाकुर, महासामन्त, माडलिक, महासामन्ताधिपति, महामण्डलेश्वर आदि।

शङ्खकृत शब्द के एक ताम्रपत्र में 1400 ग्रामों के दान का उल्लेख है। ह्वेनसांग भी बताता है कि राज्य के बड़े-बड़े अधिकारियों को भूमि अनुदान दिये जाते थे।

* **भारत में सामन्तवाद का उदय :-** कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में पड़ोसी राज्य के अर्थ में 'सामन्त' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया है। अश्वघोष के बुद्धचरित में सामन्त शब्द का प्रयोग 'जागीरदार' के लिए किया गया है। समुद्रगुप्त की नीति का भी सामन्तवाद के उदय में योगदान था। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में सामन्तों के कर्त्तव्यों का उल्लेख

मिलता है। गुप्तो की इस नीति के चलते मौखरि, परिव्राजक, वर्मन एवं मैत्रक आदि सामन्त कुलो का उदय हुआ। गुप्तकाल के पश्चात अर्थव्यवस्था मे गिरावट आई। अर्थव्यवस्था मे गिरावट आने के कारण वेतन के बदले भूमि अनुदान देने की व्यवस्था आरम्भ हुई। भूमि अनुदान का सबसे प्रारम्भिक उदाहरण 496-97 का उच्चकल्प सहाराज जयनाथ का एक ग्रहम अनुदानपत्र था।

* **ब्रह्मदेय :-** ब्राह्मणो को दिये जाने वाला भूमि अनुदान ब्रह्मदेय कहा जाता है। इसे अग्रहार एव शासन भी कहा गया है। यह अनुदान ब्राह्मणो के साथ-साथ धार्मिक संस्थाओ को भी दिये गये। वत्सराज प्रवरसेन द्वितीय की 'चम्मक प्रशस्ति' से पता चलता है कि सहस्त्र ब्राह्मणो को एक गांव दान दिया गया।

* **धर्मेत्तर भूमि अनुदान एवं सामन्तवाद :-** ब्राह्मणो के अलावा भी हमे भारत मे धर्मेत्तर भूमि अनुदान के प्रमाण मिलते है। यह धर्मेत्तर अनुदान ही हमे सामन्तवादी प्रवृत्ति के बढने के संकेत देते है। आशरफुल ताम्रपत्र (पूर्वी बंगाल) धर्मेत्तर भूमि अनुदान का 7वी-8वी शताब्दी का प्रारम्भिक उदाहरण है।

अधीनस्थ सरदार के अर्थ मे 'सामन्त' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम शान्तवर्मन कालीन पल्लव अभिलेख से प्राप्त होता है। बाणभट्ट ने हर्षचरित मे 6 प्रकार के सामन्तो - सामन्त, महासामन्त, आप्तसामन्त, प्रधानसामन्त, शत्रुमहासामन्त, एवं प्रतिसामन्त का उल्लेख किया है। भूमि अनुदानो की इस प्रक्रिया को हम मौर्योत्तर काल की 'अक्षयनीवी' तथा 'भूमिछिद्रन्याय' की परम्परा मे देख सकते है। सातवाहन शासक शातकर्णि प्रथम की रानी नागनिका के नानाघाट अभिलेख से हमे भूमि अनुदान का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य मिलता है।

गुप्तकाल मे सामन्त इतने अधिक हो गये थे कि गुप्त शासक प्रजा के स्थान पर अपने सामन्तो पर शासन करते थे।

INSTITUTE OF MANAGEMENT BULANDSHAHR

Unit-VII

(हिन्दुओं के रीति-रिवाज, संस्कार एवं मान्यताएँ)

हिन्दू धर्म की आत्मा इसमें अन्तर्निहित संस्कार हैं। हिन्दू धर्म के रीति-रिवाज एवं मान्यताओं के मूल में कहीं-न-कहीं वैज्ञानिकता है। प्राचीन भारतीय हिन्दू धर्म में मानव जीवन सोलह संस्कारों से बाँधा हुआ है। मनुष्य के गर्भ में आने से लेकर उसकी मृत्यु तक उसे सोलह संस्कारों से गुजरना पड़ता है। यह संस्कार पूरे रीति-रिवाजों के साथ सम्पन्न किये जाते हैं। व्यक्ति का जीवन उस समय पूर्ण माना जाता है जब वह तीन ऋणों - देव ऋण, ऋषि ऋण एवं पितृ ऋण से मुक्त हो जावे।

हिन्दू संस्कृति में मानव जीवन को चार आश्रमों से गुजरना होता था जो कि क्रमशः ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम एवं सन्यास आश्रम थे।

* **हिन्दू संस्कृति का मूल आधार :-** हिन्दू संस्कृति का मूल आधार वेद हैं। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद यह चार वेद भारतीय संस्कृति का मूल आधार हैं। प्रत्येक वेद के तीन विभाग हैं - कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड एवं ज्ञानकाण्ड। प्राचीन हिन्दुओं के रीति-रिवाजों के पीछे यही आधार थे।

* **कर्मकाण्ड** - यह विधि विधान वाला विभाग है। कर्मकाण्ड विभाग के तहत मानव अपने चित्त को शुद्ध करता है।

* **उपासनाकाण्ड** - इसमें भगवान की उपासना एवं ध्यान के विषय में बताया गया है। इसके तहत मानव अपने मन को नियन्त्रित करता है।

* **ज्ञानकाण्ड** - इसमें मनुष्य को अपने सच्चे स्वरूप का ज्ञान होता है। उपासना के तहत हम देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा करते हैं। मन्दिरों में जब हम जाते हैं तो वहां के सकारात्मक एवं पवित्र वातावरण में हमारा मन सकारात्मक विचारों से प्रफुल्लित हो जाता है। चंचल मन को चारों ओर से रोककर एकाग्र करने का सर्वप्रमुख उपाय है - मूर्तिपूजा। उपनिषद हमें जीवन की वास्तविकता से अवगत कराते हैं। इसके तहत हमें अपनी आत्मा का ज्ञान प्राप्त होता है। इस ब्रह्म के बारे में जानने में सक्षम होते हैं।

* **हिन्दुओं के रीति-रिवाज एवं मान्यताएँ:-** हिन्दुओं के रीति-रिवाजों के मूल में वैज्ञानिकता है। उनकी मान्यताओं के पीछे वैज्ञानिक आधार खोजा जा सकता है।

* **ब्रह्म मुहूर्त में उठना :-** हिन्दुओं में ब्रह्म मुहूर्त में उठने की बात की जाती है।

यह प्रायः 4 से 5 बजे तक माना जाता है। आयुर्वेद के अनुसार प्रातः काल की वायु में संजीवनी शक्ति होती है। इस समय शान्त वातावरण मस्तिष्क को शान्ति देता है। तथा शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

* **प्राणायाम** :- इसके द्वारा श्वास पर नियन्त्रण स्थापित किया जाता है। श्वास की गति को नियमित किया जाता है। जो लोग नियमित प्राणायाम करते हैं उनके फेफड़े शक्तिशाली रहते हैं।

* **दैनिक स्नान** :- हिन्दू संस्कृति में प्रतिदिन प्रातः काल में स्नान करने का, पवित्र होकर पूजा पाठ करने को महत्व दिया गया है। वैज्ञानिक दृष्टि से स्नान का तात्पर्य शारीरिक शुद्धि से है।

* **सूर्य को अर्घ्य** :- वेदों में सूर्य को अर्घ्य देने की बात कही गई है। जो कीटाणु गरम पानी में उबलने पर भी नष्ट नहीं होते हैं वे प्रातः कालीन सूर्य की किरणों से नष्ट हो जाते हैं। सूर्य की किरणों में विटामिन D होता है।

* **प्रणाम की परम्परा** - हिंदू संस्कृति में हाथ मिलाने के स्थान पर प्रणाम की परम्परा है।

* **चरण-स्पर्श** - हिन्दू संस्कृति में छोटे चरण स्पर्श कर बड़ों का आशीर्वाद - आयु वृद्धि, विद्या वृद्धि के रूप में लेते हैं।

* **साष्टांग प्रणाम** - हिन्दू लोग मन्दिरों में जाकर प्रभु के सामने साष्टांग प्रणाम करते हैं। साष्टांग प्रणाम के दौरान शरीर का प्रत्येक अंग, दृष्टि और मन प्रभु के सामने झुक जाता है।

* **तिलक लगाना** - मस्तिष्क के ऊपर वाला भाग 'अग्रमस्तिष्क' कहलाता है। यहीं पिट्यूटरी ग्रन्थि होती है। यह अन्तःस्रावी तंत्र की अधिनायक है। हमारी दोनों भौंहों के बीच शरीर के सात चक्रों में से एक 'आज्ञा-चक्र' या ज्ञान चक्र स्थित रहता है। यहाँ तिलक लगाने से 'आज्ञा-चक्र' जागृत होने में मदद मिलती है।

* **पीपल वृक्ष की पवित्रता** - हिन्दू धर्म में पीपल के वृक्ष को पवित्र माना गया है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखे तो पीपल एकमात्र ऐसा वृक्ष है जो दिन-रात प्रचुर मात्रा में आक्सीजन विसर्जित करता है।

BULANDSHAHR

विवाह

प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सोलह संस्कारों में विवाह एक महत्वपूर्ण तथा आवश्यक संस्कार है। हिन्दू समाज में विवाह को एक पवित्र धार्मिक संस्था के रूप में मान्यता दी गई है।

स्मृति ग्रन्थो (मनुस्मृति) मे आठ प्रकारो के विवाह का उल्लेख मिलता है-

1- ब्रह्म विवाह 2- दैव विवाह 3- आर्ष विवाह 4- प्रजापत्य विवाह
5- असुर विवाह 6- गान्धर्व विवाह 7- राक्षस विवाह 8- पैशाच विवाह

सोलह संस्कार

मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न संस्कार सम्पन्न किये जाते थे। इन्हे षोडस संस्कार भी कहते है। प्राचीन भारतीय समाज मे प्रत्येक व्यक्ति इन 16 संस्कारो को विधि विधान से सम्पन्न करता था। ये 16 संस्कार निम्नलिखित है -

(1) गर्भाधान संस्कार 2. पुंसवन संस्कार 3. सीमन्तोन्नयन
(4) जातकर्म संस्कार 5. नामकरण संस्कार 6. निष्क्रमण
7. अन्न प्राशन 8. चूडाकर्म संस्कार 9. कर्णवेध
10. विद्यारम्भ संस्कार 11. उपनयन संस्कार 12. वेदारम्भ
13. केशान्त संस्कार 14. समावर्तन संस्कार 15. विवाह संस्कार
16. अन्त्येष्टि

BULANDSHAHR

आश्रम व्यवस्था

प्राचीन काल मे मनुष्य की आयु 100 वर्ष मानकर उसे चार आश्रमो मे विभाजित किया गया था। प्रत्येक आश्रम की अवधि 25 वर्ष निर्धारित की गई थी। छान्दोग्य उपनिषद के अन्तर्गत तीन आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ व वानप्रस्थ) व्यवस्था की जानकारी मिलती है। परन्तु जाबालोपनिषद् मे चार आश्रमो का उल्लेख मिलता है।

(1) ब्रह्मचर्य आश्रम (0 से 25 वर्ष)
(2) गृहस्थ आश्रम (25 से 50 वर्ष)
(3) वानप्रस्थ आश्रम (50 से 75 वर्ष)
(4) संन्यास आश्रम (75 से 100 वर्ष)

Unit-VIII

* इस्लाम का आगमन (महमूद गजनवी एवं मोहम्मद गौरी)

* इस्लाम धर्म का उत्थान:- 6 शताब्दी में सऊदी अरब में इस्लाम नामक एक नए धर्म का उदय हुआ तथा शीघ्र ही इसका विस्तार उत्तरी अफ्रीका से अरब प्रायद्वीप तथा ईरान और भारत तक हुआ। इस्लाम पैगम्बर मुहम्मद साहब द्वारा स्थापित किया गया। उन्होंने इस धर्म के उपदेश को प्रचारित किया। इस्लाम एक ही ईश्वर की उपासना पर जोर देता है और इसकी पवित्र पुस्तक कुरान है। मुस्लिमों का विश्वास है कि स्वयं ईश्वर ने कुरान का इलहाम (शिक्षा) मुहम्मद साहब को दिया है। कुरान को इस्लाम जगत में सर्वोच्च दर्जा प्राप्त है। प्रत्येक मुस्लिम को दिन में 5 बार नमाज पढ़ने को कहा गया, रमजान के माह में रोजे रखने, दान करने तथा सम्भव हो तो मक्का (सऊदी अरब) की तीर्थयात्रा करने को कहा गया है।

* हजरत मुहम्मद साहब :- का जन्म उत्तरी अरब के मक्का में 29 अगस्त 570 ई में कुरैयश कबीले के बंनू हाशिम वंश में हुआ था। पिता का नाम अब्दुल्ला तथा माता का नाम आमिना था। माँ बाप की बचपन में ही मृत्यु के कारण चाचा अबु तालिब ने ही उनका पालन पोषण किया। 25 वर्ष की आयु में उनकी शादी खादीजा से हुई। 610 ई० में हिरा नामक गुफा में पहली बार ईश्वरीय अनुकृति हुई। उन्हे सबसे पहले पैगंबर के रूप में उनकी पत्नि खादीजा ने पहचाना। 632 ई० में इनकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के बाद मुस्लिमो को राजनीतिक तथा धार्मिक नेतृत्व प्रदान करने की जिम्मेदारी खलीफा पर आ गई।

* खलीफा व्यवस्था :- पैगम्बर के उत्तराधिकारी को खलीफा कहा जाता है। खलीफा को ही समुदाय का प्रमुख माना जाता है इस्लाम में चार प्रमुख खलीफा हुए। (1) अबूबक्र (2) उमर (3) उस्मान (4) अली

* भारत पर अरब आक्रमण के कारण :- प्राचीन काल से ही अरब निवासी भारत के दक्षिण पश्चिमी तट पर व्यापार हेतू आया करते थे। इस्लाम धर्म के उत्थान के पश्चात भी अरब व्यापारी भारतीयों से व्यापार करते रहे। खलीफा उमर (634-644) के समय अरबो ने 636 ई० में आक्रमण किया। परन्तू यह आक्रमण असफल हुआ। इसके पश्चात जल एवं थल मार्ग से अरब आक्रमणों का सिलसिला चलता रहा।
अरबो के भारत पर आक्रमण के कारण निम्न थे -
* खलीफाओ का उद्देश्य था कि तलवार की शक्ति से इस्लाम का प्रचार किया जाये।
* भारत में इस्लाम धर्म के विस्तार की लालसा।
* भारत से व्यापार में अधिक आर्थिक लाभ कमाना।

BULANDSHAHR

* मुहम्मद बिन कासिम :- 711 ई० मे मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर आक्रमण किया। भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम अरब मुस्लिम था। उसने 712 ई० मे सिंध व मुल्तान को जीत लिया। कासिम के युद्ध के समय सिंध का शासक ब्राह्मणवंशी राजा दाहिर सेन था। सिंधु क्षेत्रो मे अरबो ने सर्वप्रथम क्रिरम (सिकाका), खजूर की खेती व ऊट पालन प्रारम्भ किया था। प्रथम बार सिंधुवासियो से जजिया कर (गैर मुस्लिम कर) 712 ई० मे मुहम्मद बिन कासिम द्वारा लगाया गया था। 9वी शताब्दी के बिलादुरी कृत 'किताब फुतुह-अल बलदान' मे अरबो के भारत आक्रमण के विषय मे जानकारी मिलती है।

* अरब आक्रमण का प्रभाव:- भारत के इतिहास मे वह एक साधारण दुर्घटना थी और उसने इस विशाल प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र के एक छोटे प्रदेश मात्र को प्रभावित किया। भारतीय इतिहास मे प्रथम बार सिन्ध क्षेत्र मे इस्लाम राज्य की स्थापना हुई और बड़ी संख्या मे हिन्दुओ को मुसलमान बनने हेतु बाध्य किया गया। कला, ज्योतिष, गणित, चिकित्सा आदि के क्षेत्र मे भारत के ज्ञान से अरब काफी लाभान्वित हुए। कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र मे भी अरबो ने भारत से काफी कुछ सीखा। गणित के लिए अरबी लोग भारतीयो के ऋणी है।

* महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण :- महमूद गजनी भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम तुर्क शासक सुबुक्तगीन का पुत्र था। गजनी का भारत पर आक्रमण का प्रमुख उद्देश्य इस्लाम धर्म का प्रचार न होकर भारत की सम्पत्ति को लूटना था। गजनी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किये। पहला आक्रमण 1000 ई० मे किया। गजनी का अन्तिम आक्रमण 1027ई० को जाटो के विरुद्ध किया। गजनी द्वारा 1024-25 मे सोमनाथ आक्रमण को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है।

* अलबरूनी महमूद के आक्रमण के समय भारत आया। इसकी कृति 'किताबुल-हिन्द' तत्कालीन इतिहास को जानने का स्रोत प्रस्तुत करती है।

* सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला प्रथम तुर्क शासक। यह उपाधि उसने बगदाद के खलीफा से प्राप्त की थी।

* मुइजुद्दीन मुहम्मद गौरी :- गजनी के बाद भारत पर मुहम्मद गौरी ने आक्रमण किया। गौरी को भारत मे तुर्की राज्य का संस्थापक तथा भारत मे मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। मुहम्मद गौरी द्वारा भारत पर प्रथम आक्रमण 1175 ई० मे मुल्तान व सिन्ध पर किया।

* मुहम्मद गौरी के आक्रमण :-

(i) 1175 ई० – मुल्तान व सिंध पर
(ii) 1178 ई० – आनहिलवाड़ पर
(iii) 1179 ई० – पेशावर
(iv) 1191 ई० – तराइन का प्रथम युद्ध (भटिण्डा के निकट पृथ्वीराज एवं गौरी के बीच तराइन का प्रथम युद्ध हुआ। इस युद्ध में गौरी पराजय हुआ। पृथ्वीराज ने उदारता का परिचय देते हुए गौरी को छोड़ दिया।

(v) 1192 ई० – तराइन का द्वितीय युद्ध (गौरी एवं पृथ्वीराज के बीच तराइन का द्वितीय युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में गौरी विजयी हुआ।

Note- तराइन का द्वितीय युद्ध भारतीय इतिहास में एक निर्णायक युद्ध के रूप में जाना जाता है क्योंकि इस युद्ध के पश्चात भारत में मुस्लिम सत्ता स्थापित होने के मार्ग खुल गये।

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

* भारतीयों की पराजय के कारण :-

- योग्य सैन्य संगठन एवं कुशल नेतृत्व का आभाव।
- भारतीय समाज विभिन्न जातियों एवं उपजातियों में बटा हुआ था।
- भारतीय शासकों में एकता का अभाव था जो आपस में लड़ते रहते थे।